Dr. Kaushal Kumar
B.A. III
Eco - VI

Q. अमेरिका में महान आर्थिक मन्दी के कारण एवं उसके निवारण के उपचारों का वर्णन करें।

Ans:— अर्थ व्यवस्था में व्यापार-चक्र के उस भाग को आर्थिक मन्दी कहा जाता है जब आर्थिक क्रियाओं का संकुचन होता है, उत्पादन में कमी बेरोजगारी में वृद्धि, गिरते हुए मूल्य तथा आय स्तर आर्थिक क्षेत्र में संकट कर देता है। अर्थ व्यवस्था में (poverty in plenty) की अजीबोगरीब स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अमेरिका में भी 1929 में आर्थिक मन्दी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक ऐसा झटका था कि इसके प्रभाव से देश की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई और लोगों के दिमाग में पूँजीवाद के प्रति अटूट श्रद्धा को कम कर समाजवाद एवं साम्यवाद की ओर आकर्षित किया लोगों में भुखमरी, बेरोजगारी तथा निराशा ने अमेरिकी विकास को आने वाले वर्षों तक अवरुद्ध कर दिया।

आर्थिक मन्दी के कारण (Causes of Depression 1930) :— अनेक विचारकों में आर्थिक मन्दी के कारणों को विश्लेषण में मतभेद रहा है, यहाँ तक कि व्यापार-चक्रों के बारे अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। कुछ ने इसे मौद्रिक तथा मनोवैज्ञानिक बताया है तो कुछ ने उत्पादन आधिक्य तथा पूँजीवाद का प्रतिफल तथा सरकारी नियंत्रण का अभाव, चाहे कुछ भी हो 1930 के विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी के अनेक कारणों का दुष्प्रभाव का परिणाम थी इसके कारणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :—

1. सट्टा प्रवृति :— प्रथम विश्वयुद्ध तथा युद्धोत्तरकाल में उद्योग में अत्यधिक लाभ की मात्रा ने सट्टा प्रवृत्तियों को बल दिया। जिसकी लोन के विनियोग से प्रभावित हो अनेक विनियोग कर्ता शीघ्र धनवान बनने के आतुर थे इससे 1927 तक शेयरों तथा प्रतिभूतियों के मूल्य काफी ऊँचे थे पर 1929 में मूल्यों में एकदम कमी से साथ व्यवसाय चौपट हो गया तथा बैंकों को भी धाया पहुँचा।

2. सुरक्षा की मिथ्या विचारधारा :— तीव्र विकास और सट्टा प्रवृत्तियों से जनसाधारण में अत्यधिक विश्वास और समृद्धि का भूत सवार हो गया। वे जैसे तैसे प्रकारेण धन एकत्रित करने के मद में बेहोश हो गये और वास्तविकता को भूल बैठे।

Contd.

(...cently) तथा स्फ़ीति ... क्रमशः सहायता एवं ... और मंदी ...

(iii) सरकारी नियंत्रण में ढील — प्रथम विश्वयुद्ध में तो सरकार ने निजी क्षेत्रों पर नियंत्रण बढ़ाया पर युद्ध समाप्ति के तुरन्त बाद छूट देने से नीजि क्षेत्र में दोषपूर्ण असंतुलन पैदा हो गया।

(iv) आय का असमान वितरण:- 1920 की आर्थिक समृद्धि कुछ ही परिवारों तक सीमित थी। 1920 में 60% परिवारों की आय 2,000 डॉलर से कम थी तथा 8 प्रतिशत परिवारों की आय 1,000 डॉलर से कम थी। उपर्युक्त परिवारों की राष्ट्रिय आय का 4 प्रतिशत भाग, 39% परिवारों को राष्ट्रीय आय का 20 प्रतिशत तथा बाकी 40 प्रतिशत परिवारों को राष्ट्रीय आय का 76 प्रतिशत भाग प्राप्त होता था इस असमान विषमता ने बढ़ते हुए उत्पादन और उपभोग में असंतुलन उत्पन्न कर दिया। इस असमान वितरण ने प्रभावपूर्ण मांग की कमी को जन्म दिया जिससे मंदी का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(v) मशीनों के प्रकोप से बेरोजगारी :- औद्योगिक तथा खनिज क्षेत्रों में विस्तृत रूप से मशीनों का प्रकोप होने लगा। स्टीम शोवेल से 800 में से 199 व्यक्ति बेकार हो गये, सिलाई मशीन से 85 में से 84 आदमी बेकार, इसी प्रकार अनेक क्षेत्रों में यन्त्रीकरण से बेरोजगारी बढ़ी। निरन्तर बढ़ती बेकारी ने श्रमिकों की आय में कमी को जन्म दिया। जिससे मंदी फैलने में सहायता मिली।

(vi) सुगम साख एवं विदेशी ऋण:- कम दर पर साख उपलब्ध होने से ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई। लोगों ने पहले तो बड़ी मात्रा में कारें, रेडियो, रेफ्रीजरेटर उधार पर खरीदे पर बाद में ऋण चुकाने की असमर्थता में डूबत खातों कित बाजार की दुर्दशा हो गई। यहां तक की 1929 में 31,000 डॉलर के ऋणों का भुगतान बाकी था।

(vii) प्रतिस्पर्द्धा पर नियंत्रण तथा छिपी मुद्रास्फीति :- बड़ी मात्रा में उत्पत्ति से लागत मूल्य में कमी हो जाने पर मूल्यों में स्थिरता रखी गयी। इसी प्रकार विभिन्न इकाइयों में प्रतिस्पर्द्धा को रोक कर मूल्यों अस्वाभाविक रूप से उच्चा रखा गया। इससे जहाँ एक ओर मूल्यों को गिरने से रोका गया वहाँ दूसरी ओर उच्चे मूल्यों से श्रमिकों तथा कृषकों की कार्यक्षमता में कमी की गई तथा उत्पादन एवं उपभोग में असंतुलन ने मंदी को सक्रिय योगदान दिया।

(viii) उपभोक्ता के महत्व की अनभिज्ञता : उत्पादकों को अपने लाभ का ध्यान उत्पादन क्षमता में ही प्रतित होता था

cont.